Table of Contents

2. Shiv Aarti – Hindi
3. Shiv Aarti - English-Meaning
4. Shiv Stuti
5. Shiv Chalisa
6. Shiv Panchakshari – Hindi
7. Shiv Panchakshari – English Meaning
8. Shiv Rudrashtakam – Hindi
9. Shiv Rudrashtakam - English
10. Shri Shiv Lingashtakam – Hindi
11. Shri Shiv Lingashtakam - English
12. Shri Shiv Bilvashtakam -Hindi
13. Shri Shiv Bilvashtakam – English
14. Shiv Tandav Stotram - Hindi
15. Shiv Tandav Stotram - English

SHIV AARTI

ॐ जय शिव ओंकारा ॐ जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ जय शिव...॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ ॐ जय शिव...॥

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे।
त्रिगुण रूपनिरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ जय शिव...॥

अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी ।
चंदन मृगमद सोहै भाले शशिधारी ॥ ॐ जय शिव...॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे ॥ ॐ जय शिव...॥

कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता ।
जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता ॥ ॐ जय शिव...॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर मध्ये ये तीनों एका ॥ ॐ जय शिव...॥

त्रिगुण शिवजीकी आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय शिव...॥

OM JAI SHIV OMKARA, PRABHU JAI SHIV OMKARA
BRAHMA VISHNU SADA SHIV, ARDHANGII DHARA
OM JAI SHIV OMKARA...

EKANANA CHATURANAN PANCHANAN RAJE
HANSANAN, GARURAASAN VRISHVAHAN SAJE
OM JAI SHIV OMKARA....

DO BHUJA, CHAAR CHATURBHUJA DASHABHUJA ATI SOHE
TIINON ROOP NIRAKHATE TRIBHUVAN JAN MOHE
OM JAI SHIV OMKARA...

AKSAMALA VANAMALA MUNDAMALA DHARI
CHANDANA MRIGAMAD SOHAI BHAALE SHASHIDHAARI
JAI SHIV OMKARA...

SHVETAMBARA PIITAMBARA BAAGHAMBARA ANGE
SANAKAADHIK GARUNADIK BHUTADIK SANGE
OM JAI SHIV OMKARA...

KARA MADHYE KAMANDALU CHAKRA TRISHUL DHARTA
JAGKARTA JABHARTA JAGAPALAN KARTA
JAI SHIV OMKARA...

BRAHMA VISHNU SADASHIVA JANATA AVIVEKA
PRANAVAKSAR KE MADHAYA YE TINONH EKA
OM JAI SHIV OMKARA...

TRIGUN SWAMI KI AARTI JO KOI NAR GAVE
KAHATA SHIVANANDA SWAMI MANA VANCHITA PHALA PAVE
JAI SHIV OMKARA...

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916

Jai Shiv Omkara, Om jai Shiv Omkara,
Brahma Vishnu Sadashiv Arddhagni Dhara.
Om Jai Shiv Omkara

Meaning: Glory to you, O Shiva! Glory to you, O Omkaara! May Brahma, Vishnu and the assembly of other gods, including the great Lord Shiva, relieve me of my afflictions!

Ekanan Chaturanan Panchanan Rajai,
Hansanan Garudasan Vrishvahan Sajai.
Om Jai Shiv Omkara

Meaning: Being the Absolute, True being, Consciousness and Bliss, you play the roles of all the three Gods - Brahma, Vishnu and Shiva. As Vishnu, you have but one face, as Brahma four and as Shiva five. They gladden the sight of all who behold them. As Brahma you prefer the back of the swan for your seat, as Vishnu you like to ensconce yourself on the back of Garuda and as Shiva you make the sacred bull your conveyance; all these stand ready

Do Bhuj Char Chaturbhuj Das Bhuj Ati Sohe,
Trigun Roop Nirakhta Tribhuvan Jan Mohe.
Om Jai Shiv Omkara

Meaning: As Brahma, you possess two arms, as Vishnu four and as Shiva (Dashabaahu) ten, all of which look matchlessly lovely. No sooner do the inhabitants of the three spheres behold you than they are all enchanted. O great Lord Omkaara, pray rid me of my afflictions.

Akshaymala Vanmala Mundmala Dhari,
Chadan Mrigmad Sohai Bhale Shashi Dhari.
Om Jai Shiv Omkara

Meaning: You are, O great Lord Omkaara, wearing a garland of Rudraaksha, another of forest flowers the third of skulls; your forehead, glistening in the moonlight which it holds, is smeared with sandal-paste and musk. Pray rid me of my afflictions.

Shvetambar Pitambar Baghambar Ange,
Sankadik Garunadik Bhootadik Sange.
Om Jai Shiv Omkara

Meaning: O great Lord Omkaara, your body is attired in white and yellow silken clothes and in tiger skin, while in your company are troops of goblins, gods like Brahma and divine seers like Sanaka. Pray rid me of my afflictions.

Kar ke Mashya Kamandalu Chakra Trishooldhari,
Sukhkari Dukhhari Jag Palankari.
Om Jai Shiv Omkara

Meaning: O great Lord Omkaara, you hold akamandalu (the endicants water-jar) in one of your hands and in another a trident; you bring joy to all, destroy all distress and sustain the whole world. May you rid me of all my afflictions!

Brahma Vishnu Sadashiv Jaanat Aviveka,
Pranvaakshar me Shobhit Yah Tinon Eka.
Om Jai Shiv Omkara

Meaning: The ignorant (unwise and stupid) know Brahma, Vishnu and Shiva as three individual gods, but they are all indistinguishably fused into a single mystic syllable ‘OM’. Pray rid me of my afflictions.

Trigun Swami ji Ki Aarti Jo Koi Nar Gave,
Kahat Shivanand Swami Manvanchhit Phal Pave.
Om Jai Shiv Omkara

Meaning: Says Swami Shivananda, “He who recites this Arti to the Lord of the three gunas-sattva, rajas and tamas - attains fulfillment of his heart’s desire”. O great Lord Omkaara, may you rid me of my afflictions.

Shiv Stuti

शीश गंग अर्धंग पार्वती,सदा विराजत कैलासी ।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं,धरत ध्यान सुर सुखरासी ॥

शीतल मन्द सुगन्ध पवन,बह बैठे हैं शिव अविनाशी ।
करत गान-गन्धर्व सप्त स्वर,राग रागिनी मधुरासी ॥

यक्ष-रक्ष-भैरव जहँ डोलत,बोलत हैं वनके वासी ।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर,भ्रमर करत हैं गुंजा-सी ॥

कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु,लाग रहे हैं लक्षासी ।
कामधेनु कोटिन जहँ डोलत,करत दुग्ध की वर्षा-सी ॥

सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित,चन्द्रकान्त सम हिमराशी ।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित,सेवत सदा प्रकृति दासी ॥

ऋषि मुनि देव दनुज नित सेवत,गान करत श्रुति गुणराशी
ब्रह्मा, विष्णु निहारत निसिदिन,कछु शिव हमकूँ फरमासी

ऋद्धि-सिद्धि के दाता शंकर,नित सत् चित् आनन्दराशी ।
जिनके सुमिरत ही कट जाती,कठिन काल यमकी फांसी ॥

त्रिशूलधरजी का नाम निरन्तर,प्रेम सहित जो नर गासी ।
दूर होय विपदा उस नर की,जन्म-जन्म शिवपद पासी ॥

कैलासी काशी के वासी,विनाशी मेरी सुध लीजो ।
सेवक जान सदा चरनन को,अपनो जान कृपा कीजो ॥

तुम तो प्रभुजी सदा दयामय,अवगुण मेरे सब ढकियो ।
सब अपराध क्षमाकर शंकर,किंकर की विनती सुनियो ॥

शीश गंग अर्धंग पार्वती,सदा विराजत कैलासी ।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं,धरत ध्यान सुर सुखरासी ॥

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916

श्री शिव चालीसा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान। कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान॥

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के॥
अंग गौर शिर गंग बहाये। मुण्डमाल तन क्षार लगाए॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे। छवि को देखि नाग मन मोहे॥
मैना मातु की हवे दुलारी। बाम अंग सोहत छवि न्यारी॥
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी॥
नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे॥
कार्तिक श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ॥
देवन जबहीं जाय पुकारा। तब ही दुख प्रभु आप निवारा॥
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी॥
तुरत षडानन आप पठायउ। लवनिमेष महँ मारि गिरायउ॥
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा कर लीन बचाई॥
किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं॥
वेद माहि महिमा तुम गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई॥
प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला। जरत सुरासुर भए विहाला॥
कीन्ही दया तहं करी सहाई। नीलकण्ठ तब नाम कहाई॥
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा॥
सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी॥
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहं सोई॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भए प्रसन्न दिए इच्छित वर॥
जय जय जय अनन्त अविनाशी। करत कृपा सब के घटवासी॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै। भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। येहि अवसर मोहि आन उबारो॥
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट ते मोहि आन उबारो॥
मात-पिता भ्राता सब होई। संकट में पूछत नहिं कोई॥
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु मम संकट भारी॥
धन निर्धन को देत सदा हीं। जो कोई जांचे सो फल पाहीं॥
अस्तुति केहि विधि करैं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी॥
शंकर हो संकट के नाशन। मंगल कारण विघ्न विनाशन॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं। शारद नारद शीश नवावैं॥
नमो नमो जय नमः शिवाय। सुर ब्रह्मादिक पार न पाय॥
जो यह पाठ करे मन लाई। ता पर होत है शम्भु सहाई॥
ॠनियां जो कोई हो अधिकारी। पाठ करे सो पावन हारी॥
पुत्र होन कर इच्छा जोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥
पण्डित त्रयोदशी को लावे। ध्यान पूर्वक होम करावे॥
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा। ताके तन नहीं रहै कलेशा॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे। शंकर सम्मुख पाठ सुनावे॥
जन्म जन्म के पाप नसावे। अन्त धाम शिवपुर में पावे॥
कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी। जानि सकल दुःख हरहु हमारी॥

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करौं चालीसा। तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश॥
मगसर छठि हेमन्त ॠतु, संवत चौसठ जान। अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण॥

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916

Shiv Panchakshari Stotram

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय

शिवाय गौरीवदनाब्जबृंदा
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय

वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमूनीन्द्र
देवार्चिता शेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमावाप्नोति शिवेन सह मोदत

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916

Aum Namah Shivaya Shivaya Namah Aum
Aum Namah Shivaya Shivaya Namah Aum

Nagendraharaya Trilochanaya
Bhasmangaragaya Mahesvaraya
Nityaya Suddhaya Digambaraya
Tasmai Na Karaya Namah Shivaya

He who has the king of snakes as his garland and who has three eyes,
He whose body is smeared with sacred ashes and who is the great Lord,
He who is eternal, who is ever pure with the four directions as his clothes,
Salutations to that Shiva, who is represented by the syllable "na"

Mandakini Salila Chandana Charchitaya
Nandisvara Pramathanatha Mahesvaraya
Mandara Pushpa Bahupushpa Supujitaya
Tasmai Ma Karaya Namah Shivaya

He who is worshipped with water from the Mandakini river and smeared with sandal paste,
He who is the lord of Nandi and of the ghosts and goblins, the great Lord,
He who is worshipped with Mandara and many other flowers,
Salutations to that Shiva, who is represented by the syllable "ma"

Shivaya Gauri Vadanabja Brnda
Suryaya Dakshadhvara Nashakaya
Sri Nilakanthaya Vrshadhvajaya
Tasmai Shi Karaya Namah Shivaya

He who is auspicious and who is like the newly risen sun causing the lotus-face of Gauri to blossom,
He who is the destroyer of the sacrifice of Daksha,
He who has a blue throat and has a bull as his emblem,
Salutations to that Shiva, who is represented by the syllable "shi"

Vashistha Kumbhodbhava Gautamarya
Munindra Devarchita Shekharaya
Chandrarka Vaishvanara Lochanaya
Tasmai Va Karaya Namah Shivaya

He who is worshipped by the best and most respected sages – Vasishtha, Agastya and Gautama, and also by the gods, and who is the crown of the universe,
He who has the moon, sun and fire as his three eyes,
Salutations to that Shiva, who is represented by the syllable "va"

Yagna Svarupaya Jatadharaya
Pinaka Hastaya Sanatanaya
Divyaya Devaya Digambaraya
Tasmai Ya Karaya Namah Shivaya

He who is the embodiment of yagna (sacrifice) and who has matted locks,
He who has the trident in his hand and who is eternal,
He who is divine, who is the shining one and who has the four directions as his clothes,
Salutations to that Shiva, who is represented by the syllable "ya"

Panchaksharamidam Punyam Yah Pathechchiva
Sannidhau Shivalokamavapnoti Sivena Saha Modate

He who recites this Panchakshara near Shiva,
Will attain the abode of Shiva and enjoy bliss

Shiv Rudrashtakam

नमामीश मीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपं |
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चदाकाश माकाशवासं भजेहं ||

निराकार मोङ्कार मूलं तुरीयं गिरिज्ञान गोतीत मीशं गिरीशं |
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागार संसारसारं नतो हं ||

तुषाराद्रि सङ्काश गौरं गम्भीरं मनोभूतकोटि प्रभा श्रीशरीरं |
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगाङ्गं लस्त्फालबालेन्दु भूषं महेशं ||

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुं |
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ||

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशं |
त्रयी शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ||

कलातीत कल्याण कल्पान्तरी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी |
चिदानन्द सन्दोह मोहापकारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मधारी ||

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नाराणां |
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवास

||नजानामि योगं जपं नैव पूजां नतो हं सदा सर्वदा देव तुभ्यं |
जराजन्म दुःखौघतातप्यमानं प्रभोपाहि अपन्नमीश प्रसीद! ||

Vibhu moksha personified, Veda incarnate, all-pervading Lord,
Lord, master of all, I pay obeisance to you, and am ever-worshipful,
Away from maya and the cycles of nature, of conscious desire,
I chant to you Lord Digambara, who wears the sky as a garment.
Who is formless, Aumkar's origin, beyond the three gunas,
Beyond speech, knowledge, senses, giver of grace,
Perfect One who brings awe and reverence within, Lord of Time,
Lord of Kailash, beyond this world, my obeisance to you.
Fair-skinned like Himanchal, serene, unmoved,
Of beauty and grace greater than a million Kamadevas, ever glowing,
Upon whose head resides the sacred Goddess Ganga,
Upon whose head is the crescent moon, whose neck is adorned by a snake.
In his ears are kundalas, whose eyes and eyebrows are beautiful,
Cheerful, blue necked, kind, compassionate, understanding,
Wrapped in animal skin, wearing a garland of skulls,
Dearest to all, Lord of all, I chant his name – Shankara.
Rudrarup, best, perfect, eternal, unborn, the opulent one,
With the effulgence of a million suns, with a trident in hand,
Who uproots the three kinds of griefs, who by love can be gained,
I chant Bhavani's husband's name – Shankar – to you I pray.
Beyond time, timeless, welfare incarnate, the creation's end,
Enemy of Tripura, who gives pleasure and happiness to the worthy,
Giver of eternal bliss, who removes worldly entanglements,
Kamadeva's destroyer, bless me, you churn my heart.
Husband of Parvati, till we worship your lotus feet,
We can never attain peace and joy in this world or in heaven,
Or mitigate or lessen our suffering,
Lord who resides in the heart of all, be pleased with me and my offering.
Oh Shambho, I know not yoga, or penance or worship or prayer,
But I always honor you, Oh my Lord, always be my savior,
Suffering the cycle of death, birth and old age, I burn,
Lord, protect this pained one from grief, I offer you my devotion.

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916

Shiv Rudrashtakam

Namami- Shamishan Nirvan Rupam,
Vibhum Vyapakam Brahmvedaswarupam,
Nijam Nirgunam Nirvikalpam Nireeham,
Chidaakaash Maakaashvaasam Bhajeaham. 1.

Nirakar Monkaar Mulam Tureeyam,
Giragyan Gotitmeesham Girisham,
Karalam Mahakal Kaalam Kripalam,
gunagaar sansaar paaram natoaham. 2.

Tusharadri Sankaash Gouram Gambhiram,
Manobhut Kotiprabha Shri Shariram,
Sphuranmouli Kallolini Chaaru Ganga,
Lasadbhaal Baalendu Kanthe Bhujanga. 3.

Chalatkundalam Bhru Sunetram Vishaalam,
Psannananam Neelkantham Dayaalam,
Mrigadheesh Charmambaram Mundmaalam,
Priyam Shankar Sarvnaatham Bhajaami. 4.

Prachandam Prakrishtam Pragalbham Paresham,
Akshndam Ajam Bhaanukoti Prakasham,
Trayah Shul Nirmulanam Shulipaanim,
Bhajeaham Bhavaanipatim Bhaavgamyam. 5.

Kalaateet Kalyan Kalpaantkaari,
Sada Sajjananand Data Purari,
Chidanand Sandoh Mohapahari,
Prasid Prasid Prabho Manmathaari. 6.

Na Yaavad Umanaath Padarvindam,
Bhajam Teeh Loke Pare Va Naraanaam,
Na Taavad Sukham Shaanti Santaapnaasham,
Prasid Prabho Sarv Bhutadivaasam. 7.

pg. 9

Na Jaanaami Yogam Japam Naiv Pujaam,
Natoaham Sada Sarvada Shambhu Tubhyam,
Jarajanm Duhkhough Taatapymaanam,
Prabho Paahi Aapannamamish Shamobho. 8.

[Shlok] Rudrashtak Midam Proktam Vipren Hartoshaye,
Ye Pathanti Nara Bhaktya Teshaam Shambhu Prasidati ||

[Iti Shri Shiva Rudrashtakam Sampurnam]

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916

LINGASHTAKAM

ब्रह्ममुरारि सुरार्चित लिंगं

निर्मलभासित शोभित लिंगम् |

जन्मज दुःख विनाशक लिंगं

तत्-प्रणमामि सदाशिव लिंगम् || 1 ||

देवमुनि प्रवरार्चित लिंगं

कामदहन करुणाकर लिंगम् |

रावण दर्प विनाशन लिंगं

तत्-प्रणमामि सदाशिव लिंगम् || 2 ||

सर्व सुगंध सुलेपित लिंगं

बुद्धि विवर्धन कारण लिंगम् |

सिद्ध सुरासुर वंदित लिंगं

तत्-प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ||3 ||

कनक महामणि भूषित लिंगं

फणिपति वेष्टित शोभित लिंगम् |

दक्ष सुयज्ञ निनाशन लिंगं

तत्-प्रणमामि सदाशिव लिंगम् || 4 ||

कुंकुम चंदन लेपित लिंगं

पंकज हार सुशोभित लिंगम् |

संचित पाप विनाशन लिंगं

तत्-प्रणमामि सदाशिव लिंगम् || 5 ||

देवगणार्चित सेवित लिंगं

भावै-र्भक्तिभिरेव च लिंगम् |

दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगं

तत्-प्रणमामि सदाशिव लिंगम् || 6 ||

अष्टदलोपरिवेष्टित लिंगं

सर्वसमुद्भव कारण लिंगम् |

अष्टदरिद्र विनाशन लिंगं

तत्-प्रणमामि सदाशिव लिंगम् || 7 ||

सुरगुरु सुरवर पूजित लिंगं

सुरवन पुष्प सदार्चित लिंगम् |

परात्परं परमात्मक लिंगं

तत्-प्रणमामि सदाशिव लिंगम् || 8 ||

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेश्शिव सन्निधौ |

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ||

LINGASHTAKAM

Brahma Murari Sura Architha Lingam,
Nirmala Bashitha Shobitha Lingam,
Janmaja Dukha Vinasaka Lingam.
That pranamami sada shiva lingam.

I bow before that Lingam, which is the eternal Shiva,
Which is worshipped by Brahma, Vishnu and other Devas,
Which is pure and resplendent,
And which destroys sorrows of birth.

Deva Murari Pravarchitha Lingam,
Kama Dahana Karunakara Lingam,
Ravana Darpa Vinashana Lingam,
That Pranamami Sad Shiva Lingam.

I bow before that Lingam, which is the eternal Shiva,
Which is worshipped by great sages and devas,
Which destroyed the god of love,
Which showers mercy,
And which destroyed the pride of Ravana.

Sarva Sukandhi Sulepitha Lingam,
Budhi Vivarthana Karana Lingam,
Siddha Surasura Vandhitha Lingam,
That Pranamami Sada Shiva Lingam.

I bow before that Lingam, which is the eternal Shiva,
Which is anointed by perfumes,
Which leads to growth of wisdom,
And which is worshipped by sages, devas and asuras.

Kanaka Mahamani Bhooshitha Lingam,.
Panipathi Veshtitha Shobitha Lingam,
Daksha Suyagna Vinasana Lingam,
That Pranamami Sada Shiva Lingam.

I bow before that Lingam, which is the eternal Shiva,
Which is ornamented by gold and great jewels,
Which shines with the snake being with it,
And which destroyed the Yagna of Daksha.

Kunkuma Chandana Lepitha Lingam,
Pankaja Hara Sushobitha Lingam,
Sanchitha Papa Vinasana Lingam,
That Pranamami Sada Shiva Lingam.

I bow before that Lingam, which is the eternal Shiva,
Which is adorned by sandal paste and saffron,
Which wears the garland of lotus flowers,
And which can destroy accumulated sins.

Deva Ganarchitha Sevitha Lingam,
Bhavair Bakthi Pravesa Lingam,
Dinakara Koti Prabhakara Lingam,
That Pranamami Sada Shiva Lingam.

I bow before that Lingam, which is the eternal Shiva,
Which is served by gods and other beings,
Which is the doorway for devotion and good thought,
And which shines like billions of Suns.

Ashta Dalopari Veshtitha Lingam,
Sarva Samudbhava Karana Lingam,
Ashta Daridra Vinasana Lingam,
That Pranamami Sada Shiva Lingam.

I bow before that Lingam, which is the eternal Shiva,
Which is surrounded by eight petals,Which is the prime reason of all riches,
And which destroys eight types of poverty.

Suraguru Sura Vara Poojitha Lingam,
Sura Vana Pushpa Sadarchitha Lingam,
Parathparam Paramathmaka Lingam,
That Pranamai Sada Shiva Lingam.

I bow before that Lingam, which is the eternal Shiva,
Which is worshipped by the teacher of gods,
Which is always worshipped by the flowers,From the garden of Gods,
Which is the eternal abode,And which is the ultimate truth.

Lingashtakam, Idam Punyam Padeth Shiva Sannidhow,
Shivalokam Avapnothi Shive Na Sahamodathe.

Any one who chants the holy octet of the Lingam,
In the holy presence of Lord Shiva
Would in the end reach the world of Shiva,And keep him company.

श्री शिव बिल्वाष्टकम

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनॆत्रं च त्रियायुधं
त्रिजन्म पापसंहारम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च अच्चिद्रैः कॊमलैः शुभैः
तवपूजां करिष्यामि ऎकबिल्वं शिवार्पणं

कॊटि कन्या महादानं तिलपर्वत कॊटयः
काञ्चनं क्षीलदानॆन ऎकबिल्वं शिवार्पणं

काशीक्षॆत्र निवासं च कालभैरव दर्शनं
प्रयागॆ माधवं दृष्ट्वा ऎकबिल्वं शिवार्पणं

इन्दुवारॆ व्रतं स्थित्वा निराहारॊ महॆश्वराः
नक्तं हौष्यामि दॆवॆश ऎकबिल्वं शिवार्पणं

रामलिङ्ग प्रतिष्ठा च वैवाहिक कृतं तधा
तटाकानिच सन्धानम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

अखण्ड बिल्वपत्रं च आयुतं शिवपूजनं
कृतं नाम सहस्रॆण ऎकबिल्वं शिवार्पणं

उमया सहदॆवॆश नन्दि वाहनमॆव च
भस्मलॆपन सर्वाङ्गम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

सालग्रामॆषु विप्राणां तटाकं दशकूपयॊः
यज्नकॊटि सहस्रस्च ऎकबिल्वं शिवार्पणं

दन्ति कॊटि सहस्रॆषु अश्वमॆध शतक्रतौ
कॊटिकन्या महादानम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

बिल्वाणां दर्शनं पुण्यं स्पर्शनं पापनाशनं
अघॊर पापसंहारम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

सहस्रवॆद पाटॆषु ब्रह्मस्तापन मुच्यतॆ
अनॆकव्रत कॊटीनाम् ऎकबिल्वं शिवार्पणं

अन्नदान सहस्रॆषु सहस्रॊप नयनं तधा
अनॆक जन्मपापानि ऎकबिल्वं शिवार्पणं

बिल्वस्तॊत्रमिदं पुण्यं यः पठॆश्शिव सन्निधौ
शिवलॊकमवाप्नॊति ऎकबिल्वं शिवार्पणं

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916

Shri Shiv Bilvashtakam

Tridalam Trigunakaaram Trinethram Cha Triyayudham,
Trijanma Papa Samharam Eka Bilwam Shivarpanam **[1]**

Trishakhai Bilwapathraischa Hyachidrai Komalai Shubai,
Shiva Poojam Karishyami, Eka Bilwam Shivarpanam **[2]**

Aganda Bilwa Pathrena Poojithe Nandikeshware,
Shudhyanthi Sarva Papebhyo, Eka Bilwam Shivarpanam **[3]**

Salagrama Shilamekaam Vipranam Jatha Cha Arpayeth,
Soma Yagna Maha Punyam, Eka Bilwam Shivarpanam **[4]**

Dandi Koti Sahasrani Vajapeya Sathani Cha,
Koti Kanya Maha Danam, Eka Bilwam Shivarpanam **[5]**

Lakshmyasthanutha Uthpannam Mahadevasya Cha Priyam,
Bilwa Vruksham Prayachami, Eka Bilwam Shivarpanam **[6]**

Darshanam Bilwa Vrukshasya, Sparsanam Papa Nasanam,
Aghora Papa Samharam, Eka Bilwam Shivarpanam **[7]**

Kasi Kshethra Nivasam Cha Kala Bhairava Darshanam,
Prayaga Madhavam Drushtwa, Eka Bilwam Shivarpanam **[8]**

Moolatho Brahma Roopaya, Madhyatho Vishnu Roopine
Agratha Shiva Roopaya, Eka Bilwam Shivarpanam **[9]**

Bilwashtakam Idham Punyaam, Yah Padeth Shiva Sannidhou,
Sarva Papa Nirmuktha Shiva Loka Maapnuyath **[10]**

I offer one leaf of Bilwa to Lord Shiva,
Which has three leaves,causes three qualities,
like the three eyes of Shiva,triad of weapons,
And which destroys sins of three births.

Which has three shoots,do not have holes,
good and pretty,And worship Lord Shiva.
For if an uncut leaf is offered,To god Nandi,
We get cleaned of all our sins.

For it is equal to, offering a saligrama to a Brahmin,
Or the great blessing got out of performing Soma Yaga,
For it is equal to gifting thousand elephants,
Or the performing of hundred fire sacrifices,
Or giving away billions of girls.

For it is equal to giving a tree of Bilwa,
Which was born from the breast of Lakshmi,
And which is very dear to the Lord Shiva.

As seeing and touching of a tree of Bilwa,
Washes away ones sins and also very great sins.
After living in the city of Kasi, Seeing Kala Bhairawa,
And also visiting the temple Of Madhawa in Allahabad.

As Brahma resides at its bottom,
Lord Vishnu lives in its middle,
And Lord Shiva lives in its tip.

Reading this holy octet of Bilwa,
In the presence of Lord Shiva,
Would save one from all sins,
And in the end take him to the world of Shiva.

||सार्थशिवताण्डवस्तोत्रम् ||

||श्रीगणेशाय नमः ||

जटा टवी गलज्जल प्रवाह पावितस्थले, गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्ग तुङ्ग मालिकाम् |
डमड्डमड्डमड्डमन्निनाद वड्डमर्वयं, चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ||१||

जटा कटा हसंभ्रम भ्रमन्निलिम्प निर्झरी, विलो लवी चिवल्लरी विराजमान मूर्धनि |
धगद् धगद् धगज्ज्वलल् ललाट पट्ट पावके किशोर चन्द्र शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ||२||

धरा धरेन्द्र नंदिनी विलास बन्धु बन्धुरस् फुरद् दिगन्त सन्तति प्रमोद मानमानसे |
कृपा कटाक्ष धोरणी निरुद्ध दुर्धरापदि क्वचिद् दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ||३||

लता भुजङ्ग पिङ्गलस् फुरत्फणा मणिप्रभा कदम्ब कुङ्कुमद्रवप् रलिप्तदिग्व धूमुखे |
मदान्ध सिन्धुरस् फुरत् त्वगुत्तरीयमे दुरे मनो विनोद मद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ||४||

सहस्र लोचनप्रभृत्य शेष लेखशेखर प्रसून धूलिधोरणी विधूस राङ्घ्रि पीठभूः |
भुजङ्ग राजमालया निबद्ध जाटजूटक श्रियै चिराय जायतां चकोर बन्धुशेखरः ||५||

ललाट चत्वरज्वलद् धनञ्जयस्फुलिङ्गभा निपीत पञ्चसायकं नमन्निलिम्प नायकम् |
सुधा मयूखले खया विराजमानशेखरं महाकपालिसम्पदे शिरोज टालमस्तु नः ||६||

कराल भाल पट्टिका धगद् धगद् धगज्ज्वल द्धनञ्जयाहुती कृतप्रचण्ड पञ्चसायके |
धरा धरेन्द्र नन्दिनी कुचाग्र चित्रपत्रक प्रकल्प नैक शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम |||७||

नवीन मेघ मण्डली निरुद् धदुर् धरस्फुरत्- कुहू निशीथि नीतमः प्रबन्ध बद्ध कन्धरः |
निलिम्प निर्झरी धरस् तनोतु कृत्ति सिन्धुरः कला निधान बन्धुरः श्रियं जगद् धुरंधरः ||८||

प्रफुल्ल नीलपङ्कज प्रपञ्च कालिम प्रभा- वलम्बि कण्ठकन्दली रुचिप्रबद्ध कन्धरम् |
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छि दांध कच्छिदं तमंत कच्छिदं भजे ||९||

अखर्व सर्व मङ्गला कला कदंब मञ्जरी रस प्रवाह माधुरी विजृंभणा मधुव्रतम् |
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्त कान्ध कान्त कं तमन्त कान्त कं भजे ||१०||

जयत् वदभ्र विभ्रम भ्रमद् भुजङ्ग मश्वस – द्विनिर्ग मत् क्रमस्फुरत् कराल भाल हव्यवाट् |
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्डताण्डवः शिवः ||११||

स्पृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्- – गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः |
तृष्णारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः (समं प्रवर्तयन्मनः) कदा सदाशिवं भजे ||१२||

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वहन् |
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ||१३||

इदम् हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम् |
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् ||१४||

पूजा वसान समये दशवक्त्र गीतं यः शंभु पूजन परं पठति प्रदोषे |
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्र तुरङ्ग युक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शंभुः ||१५||

इति श्रीरावण- कृतम् शिव- ताण्डव- स्तोत्रम् सम्पूर्णम्

Shiv Tandam Stotram

Jatatavigalajjala Pravahapavitasthale
Galeavalambya Lambitam Bhujangatungamalikam
Damad Damad Damaddama Ninadavadamarvayam
Chakara Chandtandavam Tanotu Nah Shivah Shivam II1II

Jata Kata Hasambhrama Bhramanilimpanirjhari
Vilolavichivalarai Virajamanamurdhani
Dhagadhagadhagajjva Lalalata Pattapavake
Kishora Chandrashekhare Ratih Pratikshanam Mama II2II

Dharadharendrana Ndinivilasabandhubandhura
Sphuradigantasantati Pramodamanamanase
Krupakatakshadhorani Nirudhadurdharapadi
Kvachidigambare Manovinodametuvastuni II3II

Jata Bhujan Gapingala Sphuratphanamaniprabha
Kadambakunkuma Dravapralipta Digvadhumukhe
Madandha Sindhu Rasphuratvagutariyamedure
Mano Vinodamadbhutam Bibhartu Bhutabhartari II4II

Sahasra Lochana Prabhritya Sheshalekhashekhara
Prasuna Dhulidhorani Vidhusaranghripithabhuh
Bhujangaraja Malaya Nibaddhajatajutaka
Shriyai Chiraya Jayatam Chakora Bandhushekharah II5II

lalata chatvarajvaladhanajnjayasphulingabha
nipitapajnchasayakam namannilimpanayakam
sudha mayukha lekhaya virajamanashekharam
maha kapali sampade shirojatalamastu nah II6II

Karala Bhala Pattikadhagaddhagaddhagajjvala
Ddhanajnjaya Hutikruta Prachandapajnchasayake
Dharadharendra Nandini Kuchagrachitrapatraka
Prakalpanaikashilpini Trilochane Ratirmama II7II

Navina Megha Mandali Niruddhadurdharasphurat
Kuhu Nishithinitamah Prabandhabaddhakandharah
Nilimpanirjhari Dharastanotu Krutti Sindhurah
Kalanidhanabandhurah Shriyam Jagaddhurandharah II8II

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916

Praphulla Nila Pankaja Prapajnchakalimchatha
Vdambi Kanthakandali Raruchi Prabaddhakandharam
Smarachchidam Purachchhidam Bhavachchidam
Makhachchidam
Gajachchidandhakachidam Tamamtakachchidam Bhaje II9II

Akharvagarvasarvamangala Kalakadambamajnjari
Rasapravaha Madhuri Vijrumbhana Madhuvratam
Smarantakam Purantakam Bhavantakam Makhantakam
Gajantakandhakantakam Tamantakantakam Bhaje II10II

Jayatvadabhravibhrama Bhramadbhujangamasafur
Dhigdhigdhi Nirgamatkarala Bhaal Havyavat
Dhimiddhimiddhimidhva Nanmrudangatungamangala
Dhvanikramapravartita Prachanda Tandavah Shivah II11II

Drushadvichitratalpayor Bhujanga Mauktikasrajor
Garishtharatnaloshthayoh Suhrudvipakshapakshayoh
Trushnaravindachakshushoh Prajamahimahendrayoh
Sama Pravartayanmanah Kada Sadashivam Bhaje II12II

Kada Nilimpanirjhari Nikujnjakotare Vasanh
Vimuktadurmatih Sada Shirah Sthamajnjalim Vahanh
Vimuktalolalochano Lalamabhalalagnakah
Shiveti Mantramuchcharan Sada Sukhi Bhavamyaham II13II

Imam Hi Nityameva Muktamuttamottamam Stavam
Pathansmaran Bruvannaro Vishuddhimeti Santatam
Hare Gurau Subhaktimashu Yati Nanyatha Gatim
Vimohanam Hi Dehinam Sushankarasya Chintanam ||14||

Puja Vasanasamaye Dashavaktragitam
Yah Shambhupujanaparam Pathati Pradoshhe
Tasya Sthiram Rathagajendraturangayuktam
Lakshmim Sadaiva Sumukhim Pradadati Shambhuh II15II

Shree Sanatan Dharam Shiv Mandir | 803 Blaine Ave Sacramento, CA 95838
Pt. Ravendra Maharaj Ji (916) 410-0667 | **Pt Nilesh Maharaj Ji** (916) 761-5929
Facebook.com/ShivMandirSacramento **Youtube.com**/Shivmandir916